घर बैठे कर सकते हैं पढ़ने का सपना साकार ओपन यूनिवर्सिटी के साथ

अगर आप जॉब कर रहे हैं या किसी कारण रेगुलर स्टडी नहीं कर पा रहे हैं, तो ओपन लर्निंग यूनिवर्सिटी के जरिए पढ़ाई के अपने शौक को पूरा कर सकते हैं। खास बात यह है कि ऐसी अधिकृत यूनिवर्सिटीज की डिग्री रेगुलर के बराबर ही मान्य है और इसके जरिए भी आप आसानी से जॉब या जॉब में प्रमोशन पा सकते हैं अगर आप जॉब के साथ पढ़ाई करना चाहते हैं, तो इग्नू सहित देश की किसी भी मान्यता प्राप्त ओपन यूनिवर्सिटी से अपेक्षाकृत कम खर्च पर अपनी पसंद का कोर्स कर सकते हैं। ओपन यूनिवर्सिटीज में कई ऐसे कोर्स हैं, जो कामकाजी युवाओं की सॉफ्ट स्किल को चमकाते हैं। कई यूनिवर्सिटीज ऐसी हैं, जो वीकएंड में क्लास चलाती हैं। इन कोर्सेज से आप सैलरी हाइक या प्रमोशन हासिल कर सकते हैं।

1. इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी

देश की सबसे पुरानी ओपन यूनिवर्सिटी होने के नाते यहां की क्रेडिबिलिटी इसे लोकप्रिय बनाती है। इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी यानी इग्नू में भी ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन लेवल पर पढ़ाई के काफी अवसर उपलब्ध हैं। यहां 228 प्रोग्राम्स हैं, 21 स्कूल्स ऑफ स्टडीज, 67 रीजनल सेंटर्स, 810 टीचर्स और 574 एकेडमिक्स हैं। 2013-14 में 7,22,390 स्टूडेंट्स रजिस्टर्ड हैं, जबकि ऑन रोल्स स्टूडेंट्स 30,74,377 हैं। एमसीए, एमसीएस, कम्युनिकेशन डिजाइन, फुटवियर टेक्नोलॉजी, एक्सटेंशन ऐंड डेवलपमेंट स्टडीज, बीटेक इन एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग जैसे कोर्सेज काफी डिमांड में हैं।

2.दिल्ली स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग

कॉलेजों में हर दिन आने की आपाधापी, क्लास और हाजिरी के झंझट से मुक्ति चाहने वाले स्टूडेंट्स का फेवरेट सेंटर है दिल्ली यूनिवर्सिटी का स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग यानी एसओएल। यहां रेगुलर क्लास नहीं होती। एडमिशन के बाद स्टूडेंट्स को तुरंत ही स्टडी मैटीरियल दे दिया जाता है। इसके बाद उन्हें सीधे-सीधे एनुअल एग्जाम में बैठना होता है। एसओएल के बीए और बीकॉम प्रोग्राम में सिर्फ 40 परसेंट मार्क्स होने पर ही एडमिशन मिल जाता है। इसमें पॉलिटिकल साइंस, इंग्लिश और बीकॉम आनर्स में भी एडमिशन आसानी से मिल जाता है, लेकिन एक तय पैमाने में 12वीं क्लास में कम से कम 45 से 50 परसेंट या इससे ज्यादा मार्क्स की जरूरत पड़ती है। मास्टर्स लेवल पर हिंदी, संस्कृत, कॉमर्स और हिस्ट्री सब्जेक्ट्स हैं। इसके अलावा, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, ऑटोमोबाइल सर्विस ऐंड मैनेजमेंट, सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन डेवलपमेंट, वेब डिजाइन ऐंड एनिमेशन फॉर इंटरैक्टिव मीडिया जैसे कई सारे टेक्निकल कोर्सेज भी हैं, जो ग्रेजुएशन या पोस्ट ग्रेजुएशन के साथ-साथ कर सकते हैं।

3. राजर्षि टंडन ओपन यूनिवर्सिटी

यहां से आप ग्रेजुएशन कर सकते हैं। अक्सर देखा जाता है कि स्टूडेंट्स को ग्रेजुएशन करने के बाद भी किसी ऐसे फील्ड में काम करना पड़ता है, जहां केवल एक ही सब्जेक्ट में स्पेशलाइजेशन मांगी जाती है। ऐसी जॉब्स के लिए यह कोर्स बेहद कारगर साबित हो सकता है। बीसीए, एमसीए के लिए भी यह यूनिवर्सिटी जानी जाती है।

4. सिम्बॉयोसिस ओपन यूनिवर्सिटी

ओपन यूनिवर्सिटी से बिजनेस मैनेजमेंट करना हो, तो यह संस्थान बेस्ट है। नॉर्मल स्टूडेंट्स को डिस्टेंस एजुकेशन कराने के अलावा कॉरपोरेट एम्प्लॉयीज के लिए भी यहां कोर्स है। यहां की सबसे अच्छी बात यह है कि इसकी वेबसाइट के जरिए आप ऑनलाइन पढ़ाई भी कर सकते हैं। ऑनलाइन ही असाइनमेंट जमा कर सकते हैं और ऑनलाइन ही एग्जाम भी दे सकते हैं। आप ऑनलाइन चैट के जरिए ही एकेडमिक या सिलेबस से जुड़ी प्रॉब्लम डिस्कस कर सकते हैं।

5. अन्नामलाई ओपन यूनिवर्सिटी-

1929 से ही चल रही यह यूनिवर्सिटी डिस्टेंस लर्निंग के करीब 400 प्रोग्राम्स प्रोवाइड कराती है। 2005 से इसका एक कैंपस कनाडा के टोरंटो में भी चल रहा है। इसके अलावा, दुबई, शारजाह और मस्कट में भी इसके कैंपस हैं। यहां बीए से लेकर इंजीनियरिंग, मेडिकल, पीएचडी तकरीबन हर स्ट्रीम के कोर्सेज कराए जाते हैं।

6. सिक्किम मणिपाल यूनिवर्सिटी-

यह यूनिवर्सिटी एमबीए, एमसीए, बीबीए, बीसीए के लिए जानी जाती है। कई सारे अट्रैक्शंस भी हैं, 20 फीसदी तक की स्कॉलरशिप, इएमआइ पर फीस देने का ऑप्शन आदि।

डॉ. बी आर अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी हैदराबाद

नई तकनीक सीखनी हो या ग्राहक की जरूरतें बेहतर तरीके से समझनी हों, नई जिम्मेदारियों के लिए अपनी स्किल्स अपग्रेड करनी हों या अपने कमजोर पक्षों को मजबूत करना हो, प्रोफेशनल ट्रेनिंग से आप बहुत कम समय में अपनी कार्यकुशलता बढ़ा सकते हैं और मजबूती के साथ आगे ब? सकते हैं। लर्निंग से जुड़े एक ताजा सर्वे में पाया गया कि बेहतर स्किल्स वाले प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार की संभावनाएं कहीं बेहतर हैं। इस सर्वे के अनुसार सीखने के लिए तत्पर रहने वाले प्रोफेशनल्स कार्यस्थल के बदलावों के हिसाब से खुद को ढालने में सक्षम होते हैं और बड़त बनाए रखते हैं। ऐसे प्रोफेशनल्स से नियोक्ता भी आकर्षित होते हैं। कंपनियां कर्मचारियों के लिए ट्रेनिंग कराती हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि ये ट्रेनिंग आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों। इसलिए अपनी जरूरतों का आकलन करें। अपने मैनेजर या किसी भरोसेमंद सहकर्मी से बातचीत कर आप कामकाज से जड़े कमजोर पहलुओं की पहचान करें और इसी के अनुसार ट्रेनिंग की रणनीति तैयार करें। ट्रेनिंग दो तरह से हासिल की जा सकती है—एक है ऑन दि जॉब ट्रेनिंग (ऑफिस में दी जाने वाली ट्रेनिंग) और दूसरी, ऑफ दि जॉब ट्रेनिंग (ऑफिस से बाहर होने वाली ट्रेनिंग)।

ऑन दि जॉब ट्रेनिंग

यह ट्रेनिंग ऑफिस की तरफ से दी जाती है। इसमें आप ऑफिस के माहौल में नई चीजें सीखते हैं। इस ट्रेनिंग से आपका दृष्टिकोण व्यापक होता है, कार्यक्षमता बढ़ती है और आपमें दूरदर्शिता आती है। चूंकि यह पूरी तरह प्रैक्टिकल होती है, इसलिए इससे आप कई तरह की स्किल्स विकसित कर सकते हैं। आजकल कई संस्थानों में ट्रेनिंग कैलेंडर भी प्रचलित हैं, जिसमें अपनी जरूरत के अनुसार ट्रेनिंग के लिए साइन-अप कर सकते हैं।

इंटरपर्सनल कम्युनिकेशन स्किल्स ट्रेनिंग

समूह में काम करने के दौरान जब मुश्किल आती है तो अकसर शांत रहने वाले लोगों के संवाद स्पष्ट नहीं होते, वहीं कुछ इतना हावी हो जाते हैं कि अन्य सहकर्मी सहज भाव से काम करने में परेशानी महसूस करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए इंटरपर्सनल स्किल्स की ट्रेनिंग दी जाती है। इसमें लोगों के हाव-भाव को समझते हुए खुद को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करना सिखाया जाता है।

फीचर एडवांटेज ट्रेनिंग

कई बार उपभोक्ताओं को किसी प्रोडक्ट की कीमत ज्यादा लगती है। ऐसे में उन्हें प्रोडक्ट खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने से जु?ी ट्रेनिंग है एफएबी। इसके तहत सेल्स से जु? लोगों को बताया जाता है कि वे महंगे प्रोडक्ट्स के फ ीचर्स को कैसे आकर्षक तरीके से पेश करें।

ऑफ दि जॉब ट्रेनिंग

यह ट्रेनिंग कार्य स्थल से बाहर दी जाती है। हालांकि यह ट्रेनिंग ऑफिस की तरफ से दी जाती है और आप स्वतंत्र रूप से भी ऐसी ट्रेनिंग ले सकते हैं। इस ट्रेनिंग के दौरान काम का तनाव नहीं होता और आप बेहतर तरीके से नई चीजें सीखने पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। एक प्रतिष्ठित कंपनी में सीनियर एचआर मैनेजर रह चुकीं शैला सिंह बताती हैं, 'स्वतंत्र ट्रेनिंग आप अपनी सहूलियत से ले सकते हैं। इसमें आप अपनी प्लानिंग के अनुसार सॉफ्ट स्किल्स, मैनेजेरियल स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, प्रजेंटेशन स्किल्स और काम से जुड़ी विशिष्ट ट्रेनिंग ले सकते हैं।'

टेक्निकल स्किल्स ट्रेनिंग

तकनीक में होने वाले बदलावों के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए आपको निरंतर ट्रेनिंग की जरूरत होती है। मसलन, अगर आपने सी प्लसप्लस में ट्रेनिंग ली है तो उसके नए संस्करण की जानकारी जरूरी है। ऐसी ट्रेनिंग में सॉफ्टवेयर अपडेट या ऑफिस के नए इक्विपमेंट्स के इस्तेमाल जैसी चीजें बताई जाती हैं।

कॉनफ्लिक्ट मैनेजमेंट ट्रेनिंग

कंपनी के अलग-अलग विभागों में सामंजस्य होने पर काम सुगम तरीके से हो पाता है, लेकिन कई बार विभागों में गतिरोध होने पर मुश्किलें पैदा होती हैं। मसलन, किसी प्रोजेक्ट को लेकर फाइनेंस और मार्केटिंग विभाग एक दूसरे के विपरीत खड़े नजर आते हैं। मार्केटिंग वाले कंपनी के विस्तार के लिए बड़े बजट की मांग करते हैं, वहीं फाइनेंस वालों को यह फिजूलखर्ची लगती है। ऐसे में सामंजस्य बनाना और सबके हित साथ लेकर चलना सिखाया जाता है।

ई-मेल ट्रेनिंग

चाहे आप मैनेजर हों या बिजनेस लीडर या इससे इतर काम संभालते हों, प्रोजेक्ट मीटिंग, ट्रबल शूटिंग, क्राइसिस मैनेजमेंट, सेल्स कॉल, कस्टमर सर्विस और कॉन्ट्रेक्ट नेगोशिएशन आदि के लिए आपको रोजाना ई-मेल करने की जरूरत होती है। ऐसे में सरल, स्पष्ट, त्रुटिविहीन और प्रभावी ई-मेल करने की ट्रेनिंग लेना बेहद आवश्यक है। इससे आप अन्य प्रोफेशनल्स से बेहतर संवाद स्थापित कर पाते हैं।

ट्रेनिंग से मिलेंगे आगे बढ़ने के मौके...

इमोशनल इंटेलिजेंस ट्रेनिंग

मैनेजर जैसे वरिष्ठ पद पर बैठे लोगों को अपने जूनियर्स के साथ उचित व्यवहार करना सिखाया जाता है। कई बार सेल्स टार्गेट हासिल करने के लिए मैनेजर अपने मातहत लोगों के साथ बहुत रूखे तरीके से पेश आते हैं, जिससे काम बिगड़ने की आशंका रहती है। इससे बचाव के लिए इमोशनल इंटेलिजेंस की ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें भावनाओं पर काबू रखते हुए टार्गेट हासिल करने का हुनर सिखाया जाता है।

टाइम मैनेजमेंट ट्रेनिंग

प्रोजेक्ट्स समयसीमा के भीतर पूरे करने के लिए इस ट्रेनिंग में महत्वपूर्ण कामों के लिए समय बांटने, शिड्यूलिंग प्रणाली अपनाने, विशेष काम आउटसोर्स करने और तकनीक का प्रभावी उपयोग सिखाया जाता है। इससे आप अपना मूल्यांकन बेहतर तरीके से कर पाते हैं। आप किन कामों में कितना वक्त लगाते हैं, किन कामों को टालते हैं, यह आपको स्पष्ट हो जाता है। साथ ही आपको डेस्क व्यवस्थित रखना भी सिखाया जाता है, ताकि आप न्यूनतम समय में अपने काम की चीजें खोज सकें। रोजमर्रा के कामों और उसके बीच ई-मेल, फोन कॉल आदि से पैदा होने वाली रुकावटों से किस तरह निबटा जाए, इसके लिए भी आपको उपयोगी सुझाव मिलते हैं।

सोशल मीडिया मैनेजमेंट ट्रेनिंग

कंपनियों की छवि बहुत हद तक सोशल मीडिया में होने वाली चर्चा पर निर्भर करती है। ऐसे में कंपनी की साख बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया हैंडल करने, नकारात्मक टिप्पणियों से बचने और संवेदनशील जानकारियां गोपनीय रखने का तरीका सिखाया जाता है।

इमेज मैनेजमेंट

मैनेजर स्तर के प्रोफेशनल्स के लिए पद के अनुरूप बॉडी लैंग्वेज होना आवश्यक होता है। बड़े ओहदे पर काम कर लोगों से बड़ी अपेक्षाएं भी होती हैं कि वे संजीदगी के साथ समस्याओं का हल निकालेंगे। इसे ध्यान में रखते हुए इमेज मैनेजमेंट ट्रेनिंग के अंतर्गत ड्रेसिंग स्टाइल, हाव-भाव, बोलने के लहजे जैसी बारीक चीजों पर ध्यान देने की ट्रेनिंग दी जाती है।

स्मार्ट ट्रेनिंग

स्मार्ट यानी 'स्पेसिफिक मेजरेबल एचीवेबल रियलिस्टिक टाइम' की अवधारणा के साथ काम करना। आईटी से जुड़े लोगों को कम समय में बड़े प्रोजेक्ट्स पूरे करने के लिए यह कारगर रणनीति सिखाई जाती है। इसके तहत स्पेसिफिक यानी विशिष्ट लक्ष्यों, मेजरेबल यानी गणना योग्य, एचीवेबल यानी जिन्हें पाना पहुंच के भीतर हो, रियलिस्टिक यानी व्यावहारिक और टाइम यानी समय प्रबंधन जैसे पक्षों पर ध्यान देना सिखाया जाता है।

इसके अलावा भी पॉजिटिव थिंकिंग, स्ट्रेस मैनेजमेंट, करियर डेवलपमेंट, नेगोशिएशन टेक्नीक, सेल्स ट्रेनिंग, क्रॉस कल्चरल कम्यूनिकेशन, क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग जैसी कई तरह की उपयोगी ट्रेनिंग उपलब्ध कराई जाती हैं, जिसका आप फायदा उठा सकते हैं।

इंटरनेट के बिना भी हर महीने कमाई...

आज कल कोई भी इंसान ऐसा नहीं है जो इंटरनेट का प्रयोग ना करता हो। लेकिन आप बिना किसी इंटरनेट के भी घर बैठे अपनी स्किल की बदौलत अच्छी-खासी इनकम की जा सकती। वह तरीका है- हैंडराइटिंग जॉब का। चेन्नई, हैदराबाद, मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु जैसे शहरों के लोग हैंडरिटिन नोट्स के जरिए अच्छी कमाई कर रहे हैं। बड़ी बात कि इसके लिए कंप्यूटर और इंटरनेट की भी जरूरत नहीं है। इस जॉब से आप कुछ घंटे लगाकर हर महीने औसतन 15-20 हजार रुपए तक इनकम कर सकते हैं।

बुक पब्लिकेशन

बुक पब्लिकेशन के क्षेत्र में हैंडराइटिंग जॉब की सबसे ज्यादा जरूरत है। इन्फार्मेशन के लिए आज विकिपीडिया और गूगल सर्च जैसी वेबसाइट्स हैं। लेकिन, आज भी कई स्टूडेंट इन्फार्मेशन के लिए किताबों पर निर्भर हैं। हैंडराइटिंग जॉब का मुख्य उद्देश्य स्टूडेंट्स के लिए क्विक शॉर्ट नोट बुक पब्लिशिंग, क्विक क्वेश्चन- आंसर बएन्शरुक और क्विक सजेशन बुक के लिए है।

इनकम हैंडराइटिंग जॉब से सामान्यत एक रुपए प्रति लाइन की इनकम हो सकती है। क्विक सजेशन बुक और क्वश्चन-एन्शर के हर जवाब की एक लाइन के लिए एक रुपया तक मिलता है। इस तरह, आप हर रोज अपनी हैंडराइटिंग स्किल से 500 रुपए तक की इनकम कर सकते हैं। महीने की इनकम 15 हजार रुपए या इससे ज्यादा हो सकती है। हैंडराइटिंग जॉब पाने के लिए आप न्यूजपेपर्स की क्लासीफाइड ऐड, ओएलएक्स या क्विकर पर सर्च कर कर सकते हैं। आप क्विकर पर हैंडराइटिंग जॉब की जरूरत के लिए फ्री ऐड पोस्ट कर सकते हैं। क्विकर टीम आपको खुद सजेस्ट करेगी।

शुरू कर सकते हैं बिजनेस

हैंडराइटिंग जॉब से अधिक इनकम के लिए आप खुद एक बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इससे आपको काम करने की फ्रीडम के साथ-साथ ज्यादा इनकम भी होगी। हैंडराइटिंग जॉब बिजनेस के लिए रिक्वायरमेंट बुक पब्लिशर कंट्रीब्यूटर, डाटा कन्वर्जेशन, होम बेस ट्यूटर से सबसे ज्यादा मिलती है। हैंडराइटिंग बिजनेस शुरू करने के लिए सबसे पहल आपको होम बेस ट्यूटर से संपर्क करना होगा। इसके लिए आपको पास नई बुक पब्लिश करने का आइडिया होना चाहिए। इस बिजनेस को शुरू करने के लिए अच्छा यह है कि इसकी शुरुआत स्मॉल लेवल पर की जाए। पहले साल में आप 3 बुक ही पब्लिश कराने का प्लान बनाए। इसमें भी बेहतर यह होगा कि प्रत्येक क्लॉस की सब्जेक्ट के अनुसार शॉर्ट क्वेश्चन-एन्शर बुक पब्लिश कराएं। इस बिजनेस के लिए आप कुछ लोगों को हायर कर सकते हैं। उनसे तय निर्देशों के अनुसार क्वेश्चन-एन्शर बुक के लिए हैंडराइटिंग करा सकते हैं।

ग्रेजुएशन बाद ये कोर्सेज दे सकते हैं करियर को नई दिशा

ग्रेजुएशन के बाद छात्रों को अक्सर इस बात की चिंता सताने लगती है कि उच्च शिक्षा के लिए वो कौन सा कोर्स करें, जो उनके करियर को नयी दिशा दे सके।लेकिन ग्रेजुएशन के बाद होने वाले कोर्सेस के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं होती। लेकिन, अब छात्रों को चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि एम.ए, एम.कॉम और एम,एस.सी से कुछ हॉट के कोर्सेस के बारे में बताने जा रहे हैं जो करियर के चुनाव में मददगार साबित हो सकती है।

बी ए के बाद क्या करें

जिसने बीए विषयों में ग्रेजुएशन किया है। किसी एक विषय में एमए कर सकते हैं। इसके अलावा बीएड, एमबीए, लॉ, हॉटेल मैनेजमेंट या टूरिज्म मैनेजमेंट जैसे डिग्री कोर्सेस कर सकते हैं।वहीं फिल्म मेकिंग, मास कम्यूनिकेशन, एनिमेशन, फैशन, हेयर स्टाइलिस्ट, ब्यूटीशियन, पीजीडीसीए जैसे डिप्लोमा कोर्सेज भी कर सकते हैं।बैचलर ऑफ आर्ट्स के बाद अंग्रेजी साहित्य, दर्शन शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन करके बेहतर करियर बनाया जा सकता है।बी.ए करने के बाद एमए साइकोलॉजी करके मेडिकल और हेल्थ केयर क्षेत्र में साइकोलॉजिस्ट बन सकते है। फाइन आर्ट क्रिएटिव फिल्ड पेंटिंग या स्कल्पचर्स में रुचि रखने वाले युवा इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। ऑर्कोलॉजी के कोर्स भी कई अच्छी यूनिवर्सिटीज करवाती हैं। एम इन ऑर्कोलॉजी भी करियर का अच्छा विकल्प हो सकता है।सिविल सर्विसेस, जर्नलिज्म, फॉरेन लैंग्वेज, अनुवादक (हिंदी-इंग्लिश ट्रांसलेटर्स), लाइब्रेरी या इंफोर्मेशन साइंस के कोर्सेस भी कर सकते हैं।

बी एस सी के बाद क्या करें

बीएससी के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए अनेक विकल्प चुन सकते हैं या फिर सीधे किसी जॉब में लगकर अपने अनुभव और प्रतिभा के बल पर आगे बढ सकते हैं। बीएससी मात्र फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ्स, बायोलॉजी तक सीमित नहीं है।अनेक अप्लाइड साइंस सब्जेक्ट्स में बीएससी करके अपने करियर की राह आसान कर सकते हैं। बीएससी के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन करना चाहते हैं, तो यह जरूरी नहीं कि आप एमएससी ही करें। आप एमबीए करके मैनेजमेंट के क्षेत्र में, एमसीए करके आईटी के क्षेत्र में, बीएड करके एजुकेशन के क्षेत्र में जा सकते है। तो कोई स्किल-बेस्ड शॉर्ट-टर्म टेक्निकल कोर्स भी कर सकते हैं, जैसे एसएपी, जावा, एसक्यूएल, फाइनेंशियल अकाउंटिंग।

बी कॉम के बाद क्या करें

बीकॉम के बाद वही कोर्स करना चाहिए जिसमें अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। अगर कॉर्पोरेट सेक्टर में जॉब करना चाहते हैं तो एमबीए करना चाहिए। अगर टीचर बनना चाहते हैं बीकॉम के बाद आप बीएड कर सकते हैं। आप एमकॉम, एमफिल, पीएचडी कर लेते हैं और साथ ही नेट कालिफाई कर लेते हैं। तो आप बतौर लेचरर नियुक्त हो सकते हैं।आप इनकम टैक्स ऑफिसर, सीएस, सीए, आईसीडब्लूए, कॉस्ट एकाउंट जैसे कोर्सेस भी कर सकते हैं। इसके अलावा बैंक पीओ, डिफेंस और रेलवे में नौकरी के लिए भी एप्लाई कर सकते हैं। कॉमर्स में युवा टैक्सेशन, कम्प्यूटर साइंस, फॉरेन ट्रेड, इंश्योरेंस, कम्प्यूटर एप्लीकेशन आदि में ग्रेजुएशन करने के बाद इनमें पोस्ट ग्रेजुएशन कर शानदार करियर बना सकते हैं।

ई-मेल लिखते समय रखें इन बातों का ख्याल

हम सभी को कभी न कभी ई-मेल भेजना पड़ता है। खासतौर पर उन लोगों को जो ऑफिस में काम करते हैं या फिर नौकरी की तलाश में हैं। नई नौकरी पाना हो या फिर ऑफिस का कोई काम, आज कल ये सारी चीजें ई-मेल से ही होती हैं।

अगर आपको लगता है कि ई-मेल भेजना सिर्फ एक रूटीन काम है तो आपको बता दें कि ऐसा नहीं है। ई-मेल से आपकी पर्सनैलिटी का भी अंदाजा होता है और यह भी समझ आता है कि आप अपने काम को लेकर कितने गंभीर हैं। ऐसे में मेल भेजते समय रखें इन बातों का विशेष ख्याल

1. सब्जेट लाइन पर विशेष ध्यान दें :किसी भी मेल का सबसे जरूरी हिस्सा होता है उसका सब्जेक्ट। अगर आपकी सब्जेक्ट लाइन प्रभावी नहीं है तो आपके मेल का वैसा असर नहीं होगा, जैसा आप चाहते हैं। आपके मेल का जो सबसे स्ट्रांग प्वाइंट है वह सब्जेक्ट लाइन में आ जाना चाहिए। अगर आपका कोई रेफरेंस है तो भी वह मेल के सब्जेक्ट में आ जाना चाहिए।

2. वक्त का ध्यान रखना है जरूरी : कई बार ऐसा होता है कि हम मेल भेजते समय वक्त का ध्यान नहीं रखते। परिणामस्वरूप कई बार मेल मिस हो जाते हैं। अगर आप चाहते हैं कि जिस शख्स को आप मेल भेज रहे हैं वह आपके मेल को पूरे ध्यान से पढ़े और उस पर प्रतिक्रिया दे तो इस मेल को सुबह के ही समय भेजा जाए।

3. स्पेलिंग और ग्रामर का पूरा ध्यान दें : अगर आपके मेल में गलत स्पेलिंग है तो यह आपके प्रभाव को खराब कर सकता है। साथ ही सामने वाले को यह भी लग सकता है कि आपको भाषा की और शब्दों की सही जानकारी नहीं है। अगर आपको अपने ऊपर भरोसा नहीं है तो आप अपने सिस्टम में या फिर मोबाइल में स्पेलिंग चेक फीचर डाल सकते हैं। इससे किसी भी तरह की गलती होने की गुंजाइश नहीं रह जाएगी।

4. क्रॉस चेक करना है बहुत जरूरी : कोई भी मेल भेजने से पहले उसे एकबार खुद जरूर पढ़ें। हो सकता है कि आपसे कुछ गलतियां छूट गई हों। ये गलतियां भले ही पहली बार में नजर न आए लेकिन दोबारा पढ़कर उन्हें दूर किया जा सकता है।

5. साफ-सीधी बात करें : मेल में बात सीधी और टू द प्वाइंट होनी चाहिए। बातों को घुमाकर कहने से आपको फायदा नहीं होगा। बात हमेशा टू द प्वाइंट कहने की आदत डालें ताकि सामने वाला का समय बर्बाद न हो और वह आपको गंभीरता से ले।